TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4473**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥श्रीमहादेवजीसावधानमनं ॥ अथ शिवरात्रीकथा लिख्यते॥ कैलासपर्वत ऊपर विराजे श्रीमहादेवजी श्रीपार्वती
बैठा छे श्रीमहादेवजीरा रूपरी संडा इक कैठ पंचमुख छे तदे पार्वतीजी हाथ जोडने अरज करै छे अहो ईश्वर
मोनु कोई एक व्रत बतावो तिण व्रतरी उधारक्रिये तरे श्रीमहादेवजी कहै छै श्रीमहादेवोवाच हाथार
बली फागुण रा मासमे शिवरात्री री व्रत कृष्ण चौदस करो तरे पारवतीजी कहै छै श्रीमहादेवजी ओ
व्रत किण कीयो ने किण नु किणगुस्स फल हुवो। तरे श्रीमहादेवजी कहे छे श्रीमा
हादेवोवाच तो ने पुरातनी कथा कहुं। तो मो जको उजेणी नगरी तठे राजा मधुरमा राज करे छे तिण री
नगरी में महवलों क सृष्टी छे निवास कमारमहा छे अंमापरो वडो नगर ले छे तिणरे राणी पटराणी बी
जी राणी घणी छे पण उण राणी सु घणी मया छे उवा राणी श्रीमहादेवजीरी सेवा करे छे रातदिन सेवा करे
कहे म्हारे रिद्ध सिद्ध छे सु श्रीमहादेवजीरी दीनी छे आप कं पण दिराणी वे ठीमसेवा करे छे तरे राजा आय
जरे बीजी महलीनीते उनी कोई आदर नाय कीयो राणी चेतीरही क ठोसेवा करने पछे राजासुं बोली
म तरे राजारी सवारी कोई तिराणी ने मयारा पतो ईण सुं आदर नाव कीयो ने राजा तरे राजारा साथ
ने बीजे महल गया उठे आदर घणो कीयो उवा राणी वासरा खुसी कोई म्हारे राजा कदेई आवत नान
ही आजा राजी कोई पछे उवा राणी सेवा करने उठी तरे खवास कहो राणीजी थे कासुं कीयो राजाजी ने आ
दर कीयो नही सेवामें ठगरहा सो वात तो दायछे के करतार के करतार: सुखदुख री करी राजारी साथ
ने बीजा राणीरे घरे गया तरे राणी कहे छे राजासुं कांम रे नही मो ने श्रीमहादेवजीरी दीनी लिछमी छे
राजा घणी ई आई जितरे राजा जाय ने बीजी राणीरे डोलीयै सूतो नींद आई तारां सुपनेरे विषे 1
एकलीजनमरी वात याद आई पछे राजा उरत उठने वडी राणीकने आयो : तरे बीजी राणी जाणीयो

शिवरात्रि क राजा वरत व्रत नै पधारीया वभीरालीपिण ओलीबा राजपधारीया था ने व्रत व्रत कीं आया जुं रांणी राजा नै क
१ हवे: राजकाज पधारीयां पनै आज कीं आया: मो नै ईण वात री मन हुकहो तारे राजा विचारीयो वात
हीचा ही जे राजा कह्यो पाने वात कहुं छुं सो नेलो कुं आगले भव चोर थो कुचोरी करतो नेपट नरतो सु
एक ण दिन कुं चोरी करण नगर थो बो शिवरात रो दिन थो सरब कोई गांव मे जागरण करे था सुकं हरो
दाव लागो नहीं दीवा व लता घरा ते मांय आ है हट रो थो तठे कुं गयो आगे देखे तो बामण बोलीया ओर लो
क वेठा जागरण करे छे तठे कुं विणपाय नी न नार हो कोई कसुसी तरे चोरी करि सुं पछे जोनै सु सकोजा
पता बांधीयो थो सुत हे न नही तरे मे जोरकरीयो उणरी का नर ट आयो तरे कंक वोकुं वो तरे अकोटीया
क भे जिल गयो मो नि कोर वात नै बी जागीया करे कुं आवण लागा तारे कुं नाखो म्हारे लारे लागो तारां कुं
नाम पडी यो तारे जबपा लागया कुंवो वरस थरर रो मारी यो तारे जणा कहो वार मरायो कुं जे मे मरग
शिवरात रे जागरण रे प्रताप करने आरा हिवी पार्ई छे जं वात नमाने तो हा लिदि पान मारो तो मारे
ने लीकुं यम ई छे विणा वो अकोटो मी नारो हासी तारां राजा रांणी कुं चाल उपर गया देखे तो कुं वो जु
ती प पत्ती छे जाय गयो दाई छे सो नारो अकोटो नीसरयो तरे राजा रांणी कु कहयो सिवरात रे वरत रे प
तापकरने आ माहि बी पाई बी ओ नली नां ति सुंकर मी तवे कुं वडा मी थ श्री महादेव जी रा मेवा
ओगो मां कुं आयो छुं हमे शिवरात रो वरत करण लागा रा ने श्री महादेव जी री सजा गाम करणी से वा १
रा तिपो हर रा गयां कीजे शुभा डुजी रा तिआधी गयां कीजे शुजा तीजी पो हर रहे तां सूं रां कीजे सुजा चौ
थी प्रात काल कीजे नजी नांति वेद सुं जु गत सुं कीजे श्री महादेव जी श्री पारबती जी नै कहे छे एक

क थावल छे यो नै कुं कहुं छुं एक आहेडी यो जिण अनेक जीव मारीया हिरण संवर ससा: अनेक जीव मा
रीया सुएक दिन शिवरात रो दिन थो सुगाव मे आयो गांव मे मांहे कं व कुं वेठे दहरे लोक जाय छे सु आ
हेडी त मासो देखे छे आपण कुं वो छे तारे कहो मे का सुं कीयो आहेडो कोई कीयो नहीं म्हारे घरस जुं दई
का सुं तरे आहेडी तलावरी तीर आयने विचारीयो अठे कोई जीव जित पांणी पीवण नै रात रो आसी ति
ण नै कुं मारी सवा वरमां कीछे वल मे मे विचारी यो जो कदा वेलो रव आयो तो मो ने मार सी तारे बीजरो
क्ष थी तिण उपरि चढ बेठो बील डो का ली रा घो बी जरी नाची सुलटक वनपदीयो छे तिणरा टि बका पडे छे आ
श्री पांन का वी लरा छे सु तो हर ने नां बछे जिण नीचे महादेव जी री पीण्डी छे सुपां नै नै पाणी रा टि बका पडे छे सो सी
करे छे तारे ए क हिरणी पांणी पीवण नै आई तारे आहेडी वांण पांची यो हिरणी आगे देखे तो धावरमां की
छे अची जोवे तो आहेडी वांण पांचीयो छे तारे हिरणी बोली रे आहेडी तुमा नै मतां मार: तारे आहेडी क
हो कुं सुखो छुं म्हारे घरस सुभा छे तो नै मार सि तारां कुं जी वी सो: म्हारो अओ दी ज कस वछे कुं मांस पाऊं
अन न छे तरे हिरणी कहो जा मा नै मत मद: म्हारे यांगे चेटा बालक छे मु सुधा छे बाल का कं नै दोय आव
ण दे: पछे उमनै मार रेजे तारे आहेडी कसो कुं तो तु छीकुं नहीं तरे हिरणी कहो पारे कं कं सुस पाछे चुं ना
रे आहेडी कहो मे ता अनेक जीव मारीया छे पिण ते सु बोली या कोई नहीं उ मन ध सरी धी बोली बोल छे
नो मोसस पा: तारे हिरणी मोसस पा दे छे जना नगरा न समान वादे तो तिणरो पाप मो नै लागे जो बले
लो हिंसा जाय मार तिणरो पाप मो ने लाग जा अनेक सुस पा धा: तारे हिरणी ने सीख दीधी तारे दि
रणी घरे आई जाय नी कुं हा एक हिरणी चल आ बी तिण नै ड़ मारे यो हर रात गई पान बीलरा व
ल तो डे नै नो खि छे सो पान ने पांणी दीयडी रो श्री महादेव जी री पीण्डी उपर पिडे छे तारे दो य पाहर रा 2

शिवरात्र आई तरे उ मी हिरणी आई ताहरे आहेडी बांण सांधीयो तारे हिरणी बोली हुं मोने मत मारे
२ बालक नाना छे बालकां कने जाय आवणदे पछे मोने मारे ताहरे आहेडी कह्यो सुसथा ताहरे हि
रणी सुसथा खाये छे रज सुतरे होय ने रुतु सुसथाय तिण रो पाप मोने लागजो बलेर जे व्रत होयने गायांरा
वाछरू न चरे तिण रो पाप मोने लागजो अनेक सुसथा था तारे हिरणी ने जीवती थी पछे रातियो रहती
नेगई आहेडी यां न तोडने नीचा नांखे छे पां नदी वृदी रो पाणी श्री माहादेव जी री पींडी उपर पडे छे तारे
इतरा मांहे हिरण काल हरो आयो ताहरां आहेडी बांण सांधीयो हिरण दीठो हिरण कहे आगे दी
हिरणी होय आई थी सु बिलने मारीजी मती तो म्हारे जीयारो किसी कलछे हिरण कहो तुमोने बिना सु
नकां मारे छे तारे आहेडी कह्यो हिरणी कांई छि नां ति सुसथा थाई छे म्हे परनात आवांलो तारे हिर
ण कह्यो मोने ही जावण दे म्हे साथे ही अने आवांलो म्हे ने लाहोयने आवांलो तारे आहेडी कने सुस
थावे छे गायवाले तिण रो पाप मोने लागजो चाकर होयने चाकर होयने बुरो बोले तिण रो पाप मोने
लागजो बले वाजक अस्री मारे तिण रो पाप मोने लागजो बले अनेक सुसथा था तरे हिरण छु
टी वदीनी तरे हिरणी यां कने गयो कहण लागो वरत करता परनात हुवो तरे आहेडी रे व सुअन
रीयो ने कहे छे म्हे कालु की यो आर पो वरत जागीयो पाने ऊपडीयो नदी आने मो व करतो थको
घर आवे छे ताहरे आय तो दयने आहेडी री खबर मांमा आवण लागा म्हारे ताई वापकु दी त्या २
ऊमी आगे छे नादी मेरु नदी तारे नि मास हो यनवेग ने आहेडी ने ची सोच करे छे मे अनेक
कुय जीवमारीया छे सु कहने तला वपाछो आयो ने हरण हिरणी पिण सोच करे छे आपा जासा
नही तो आपणो धरम जासी जासांतो मारनांखसी पछे रा धरम रखी आवणो धररासो मरसी तरे कहे

छे धरमतो नगमावणो आयां जावसां मकोई ने जाहोयने आहेडी कने आया तारे पाछले नवरी वात
याद आई अंतकाल आहेडी मरसी पिण श्री माहादेव जी रो दरसण कीयो निमस्कार करने परिदिखणा दे
मेउ ताछे आगले जनम हिरणी अपराधी रुपरो निम्पानथी श्री इंद्रजी रा आषाडे ने जातावी नद आहेडे
रणदे सुउनो: आषाडे जाय मकी नदी व लो लागो मोडी गई तारे श्री इंद्रजी कायमा नहोयने कह्यो अ
ही कं आई जाणी जे रुपरो गर्व आणो तरे अपछरा हाथ जोडने अरजे करी माहारामी आजा हिरणांदे सू ऊ
तिण वास्ते मोडी आई तरे श्री इंद्रजी अपछरा ने सराप दीयो जा वो मृतलोक विषे हिरणी होयजी जी
ने एकयछे मो हिरण होयजो तरा हिरणी यां ने हिरणकुवा सारहे हिरणीयां ने हिरणने लाहोयने आ
डी कने आया कह्यो तुम्हाने मारे पिण म्हे कहां तिण तरे मार वे दज्यां म्हांने मार पछे हिरणने मार आ
हेडी इनरो सुणने श्रमांण थनकबाण तोड नांखीयो हाथ जोडे ने अरज करी मे तो घणो पाप कीयो छे हुं
थाने मारुं नही: मारो कोई उधार करो इतरी वात करनां थकां सरग रो विमांण आयो हिरणने हिरणी
यां आहेडी सरग गया। श्री शिवरात्री रो वरत रो ओ फल छे जागरण कीयां रे परताप करने वे कुंठ कीयो
सो वात श्री माहादेव जी श्री पारवती जी ने कही तरे श्री पारवती जी शिवरात्री रो वरत करण लागा: इति श्री
शिवरात्री कथा: संपूर्ण॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया। ... लिखितं ॥ श्री
॥श्री गुरुभ्यो नमः ॐ चित्तं च स्वाहा इदं चित्ताय चित्तं च स्वाहा इदं चित्तं आकूतं च स्वाहा: इदं माकूतं
विज्ञातं च स्वाहा इदं विज्ञाताय विज्ञातं च स्वाहा इदं विज्ञातोमनश्च स्वाहा इदं मनसे: शक्करीश्च स्वाहा ३
:इदं शक्करीश्च दर्शश्च स्वाहा: इदं दर्शाय पौर्णमास्य स्वाहा: इदं पौर्णमासाय बृहच्च स्वाहा
इदं बृहते रथंतरं स्वाहा इदं रथंतराय: प्रजापतिर्जयाय इन्द्राय: वृष्णे प्रजा यच्छदुग्रः पृतना जये

यो तस्मै वेस समवमनः सरस्वासरवस्सइदं वाचनुस्वाहा इदं प्रजापतये ३ दकोसप्रसनेः आपसेवामांत
आप्तीर्तु तानामधिपति समावतु ब्रह्मणनि स्मिन्नवचे सामासिध्यसंपरोधाय समेकरमनिस्यां देवो ऊं
३ तास्वाहा २ इदं मन्वेयः र्तु तानां माधिपतये इंडो ज्ये सानामधिपतये समावतुस्वाहा इदं मिन्द्राय जेष्ठा नामधि
पतये जमय्यथ वो नामाधिपति समावतु स्वाहाः इदं जमत्रिम्बौ नामपितये चासुरे निरिखास्याधिपतिः
समावतु वसात्र ब्रह्मणो स्मिन्नुष्पत्रे समासिध्य संपरोधाय समनकरमणी स्यां मद वो ऊं तास्वाहा इदं व
ये वेतरतिरात्र्यस्याधिपतये: सुरुजवे वो धिपतये: समाचत्वे स्मिन्न ब्रह्मणः स्मन्नुदन्ने संमासिध्य संपरोध
यः समनकर्मण्यां संदेवो ऊं तास्वाहा ५ इदे सुरुजायदेवो इदं मनोयसमाहूना मधिपतये सोमोव
धीनां मधिपतिः समावतु स्वाहा ६ इदं सोमोषधीनामधिपतीये सावीताप्रसवानां मधिपतिये: समावतु
स्वाहा: १६ इदं सवीत्री प्रसवानामधिपतये ३ स्वानुवलाधिपतिः समावतु स्वाहा ७ ३ इष्ट्रसुपाण मधिपति
विलुवर्चतीनामधिपती समावतु स्वाहा ८ इदं विलवेवर्चतानामधिपतये रुद्र प्रसुनानामधिपतिय
समावतुस्वाहाः १८ इदं रुद्रायप्रसुना नाम धिपतये: मरुतो गणानामधिपतिः समावतु इदं मरुद्भ्यो
गणानामधि: ३ स्तोमाउपितरपीतामहा परेवरेस्तचामहाः इदं माउसमत्रे लाप्सममुष्यत्रे समासि
ध्यसंपरोधाय: समनकरमणीस्यां देवो ऊं तां पस्वाहा १७ इदं पेरेम्य: परेवरेभ्यो: सततामहेभ्य: ३ द
कोसप्रसने आपसेवासांति ॥ माहादेव न भट्ट त्वं ब्रह्मालोकपीता
मह: गवास्तोत्रप्रवितुहामि लोकानंसातवर्द्धनी श्रीनारदोवाचं नारदौत्र उतोराजा धर्मपुत्रो
वि युधिष्ठिर नाकारनेके सनोमासि नाकतेसुगममोक्षुं सावेदातपरमसाक्षं नंदी नोश्वरनीतथा गचा
गोश्वरनीतथा दसवरणनं कंसदोनमिकंफलं सोनदं तानुध्वरो नाम्ना गोगीसुषकीमेदिनी

[illegible]

कालावीजेयेदानेः ३ दलाश्वमती नाहुलीदुरलस्तालोके गोरीमुकलवरश्वनी: रकंतीसिरुपकाम
स्या: धनकाम सिवरित का सावलीवत्रकामास्य: मुलंधरमसिनिलका कपिलाब्रह्मणेश्याः सर्वपाप
प्रवासनें: जोस्कंचा लाकंतेपाप: जोबनेनयथाकृतं वाचाकृतेन्वाकर्मकृतं मनसाजो सभुचितंतं म
नकुरउलाकुरं कंन्याविक्रगवानिचः आगमनुगा बनेचेव: मित्रद्रोहीचपातकं: तेनसर्वनासामतेपाप
कपिलायाजो स्कश्यविति: मतजोज नविस्तारेण माहायन्मानदी जेजालोत्रतीप्रनोः प्रनोतावर
करनयो इवेगोप्रदचिणदानः विप्रेविसाप्रजोजना: पित्रसिताश्चेसुरो विप्विवादस्जचद्भिणे तार
णीरुपसंपनं सुसीलाम्पयासनी नारजतीसबसत्रेगी सावेदा ब्रह्मणोगउ जावदसिसादो पादो सार
वेवनासिनी तावदगो सुरंनेयः गवागरननसुचीले सोवनश्रेगीसबसत्रोवाच छेटानरणसुधिसीरु
पाउरीतामाप्रथी कंसदोद्दीतथैवच इदं कपिलायेदद्या: ब्रह्मणे वेदपारग जोसमुधस्तजंमानवा
सुमपतनिवदवः अमरसलत्रजायेति मधवंसोकरस्य सोरनजत्रकरत वं नत्रप्रभतिगोप्रदा दसमेन
समानद्या: इकेश्वेवधरेश्वरा दसकंवीसमोवायी दसवायी समोनट: दसनटसमोकं न्या दसकन्यासमोगु
जा: दसमाजनवेलुग: दसगुमीयंगे त्रयं दसगोत्रानवेतीर्थ: दसतीर्थग्रहनेचेतः सर्वतीर्थं न वे मस्य
विदादान आवरेंवर: गंगादिक जनमानं हिजनमानप्रगनीग ननीवउ: जनमानि सउजत्मसवयकं
करनयो श्रुकुदेवी: चष्या मुनुवासिरगते वेनउ अंमरतादेवी जी नायंच सरस्वती उरस्कं घोमिरव
ह्मा: ललाटरु, रुदइ जा: रिवायांरोमकेचवा: प्रष्टिस्पपितनिजनमं वरुणादोन आदिलेवः कामपा
रश्चजुवं नततनीमहाबली अरसभूउ गंधर्वा असरणोगीरुवती गोमयायवसतेलक्षी: पवित्रय
दैमगदौ ऊंकारस्चउरवदा: रेनेसाभूजावति: आहारेचसरीनागा मातारासपततिश्यति नाघावउ 4

नवग्रहविध ४

म्पेयनमस्कां चिबुद्धव्यनिवास्येनिः श्रलौवरती अमृतश्रुरेत विश्रुदया ॐ लउअरतः आनवल
ककालेविनिकोलं तनिसंमाद्धावानेकनाजानं इतिगउआडश्रीसमाप्त ॥ देवसिवङ्खिनो अप्पी
वेधर्मसुत्रानुधीर्थ : व्रयनेवंनकंसउल्पंकं फलेश्रकारश्च वालीयाउकालेच : अथातसंप्रविघ्यामि इथने
उजपवंवीधा जयमंत्रेफलेदद्या सर्वपापप्रनासनं नामेकुजरितमः मंत्रद्दिंशयदेवताः विधि
लिमसुत्रपनेचैव : दानेतेत्रनेकारये जदीकचदीनारथायो देवता कुजमुलमंजेन मजनमक्तेपा
रेउखरोगीप्रमुच्यते उर्वजनमंक्ते पापं अदिजन्मेउउजंते अद्धिजनंमेउसंक्रणं सुच्यतेतत्रक
लोविधरद् मित्रणचकथच लोपएरदविकाउदानेमरगतोदमंगालोहेदसुतमं सुपनेधस
नरेतेच वालकं चदद्ते असत्रीयो वंधालांग्रह सुकतेच : त्रर्धं दनोवककारये आगमेपापसंकर
ए दयनदानेश्रमुच्यते द्वियेत्मनेनाधनं दिजन्त्रेनेउमुलमं योचेनकंसमुपात्रेच आनेन चाल
पेसुपातकं जपनेदानवसत्रमनारकतेच दोवधातसंपंचअथकं एवंचिश्रीउयातनो यदिकन्या
एइव्याते वेनमंत्रीरह्लीलेभिह्ना चत्ताम जोनिपदीला मासेदानं मनसुदातव्यं प्रत्याजेचीनद्र
उत्तारेधमनारोचे राजरोधेयेवायः डपगरंनीवारपेव उष्ट्रग्रहश्रीनेनचेन चंदेता आयनोदानेन
दीरघवारघ्नवनेच मनसोरुदमेत्रेण लीलारेश्रउजयेत जइकमत्रीमंत्रेण सुरउजाचकारये
इदंश्रुगमदश्वेवः कंधकारयः दीरदसकंअंसपत्ते इतेसुफलदप्युणं अथदानेवं पीतवस्
मकोनिते चवावीधीश्चयनेच सर्वपापप्रनाशनं इतिश्री दधनेसंपूर्णम् ॥ ॐ अथातसंप्रविघ्या
मुलसांतविधीसकन्ये वद्दोलाव त्रीयोधेचचे सुद्रसंविधिमुनमे कृतयुगचीनवंकनः त्रेतादयना वन
कापुरत्रीमेकंउकंमुमनिकरुडाये व्रह्मदविनाभर्न दो मध्यानगमवचर्वे ननतीकुलचा ननवर
नजपाआपदेरनेकंनवं गोजाडताश्रमेदर । श्रीवनापावदेरयं नेत्रिश्रानीकुवाचसनमंदेश्रारिजकं रिजा जातिगतिश्रीमद्र धीरजआयेन
पुचतेनीत । कुलमुलमयासोभ्का जेष्टदीमासनकुलसनीलेकोगरेसमेम अनरनेकोरातिम दोनईजेष्टा अमाधानेकानरी मध्यानदलीवर
२

तेअथातसंप्रविघ्यामि कलसंसंस्थंविधिः उत्तरेदेमंपारसेरवीसोदानमसामेर आरंसंमंथनेकर्मी
नदेवीसर्वसिवामई दानवीरवलासुवे वलवोवलसंभूत मंथानमंथनेकृत्वा नेत्रं कृत्वाचवासिग
मुलकूर्मसनोसधाणं विष्णुरक्षांकुम्भमेद्दिरं एकंत्रदेवतासर्वं वलवीरदानवसंकृत्वा मंथमानेन
त्रवीरादोवरुणसागरे जेतवंनेचरतनानि जननीसर्कनिजाचनं विमानंउपयसे पूरणं चेलप
नेदंमवासएल नामोअरप्यतिश्चैव पारिपोक्ष्यालिजा विम वीणावाजित्रकश्चैवः रतनानिरतिस्
लसंभूतः माणिक्यश्च नीरतनानि वालचंद्रमंधीचचं ॐ हलाणिमुरवश्चैव गवांपंचमुश्च नेच
नेदाममुरूपासुमनिना सुरीनासुर नीतथा उधेमवासमुतपनं श्रीतयंनेअमृतेनधा नसि संमधा
पितनकृत्वा पश्चारजेतीवाकलं अमृयासनानेया लाजमेनविनोकृत सर्वतोविरुनोकरमं क
लसंकामरूपेण कलाकलानांदेवानो दानवानांनमीवच निर्मलायपरश्चंद्रं कलशसतेन
उवितेकजसंसमुखेवाह्ला श्रीवायंदयनाभुजं मूलकारमसतो विह्नो मधिमेत्रीगुणसंभृत जे
कोचसागरासर्वे सप्तदिपाचमेदिनी अरजनीमामतीश्चैव : चंद्रजागामहानदि तापीगोदावरि
श्चैवः नरवदाचसरस्वती वेद्यावदअग्ध्वश्चेवः नरनीदोवेत्ररवा श्रनासपोद्दकरश्चैव नईमुखं
क्षिमालयं वटस्तुरेतिमुरत्पेच गगागरसंगमे प्रथमाजानितीरथानि कलशेनानसंनेसदितं अ
त्रसौतिउष्टच गायत्रीसन्दीनच आनिघतीसमाभ्याने तथादेवी अभिकेतधारिगवेदाजजुर्वेदास
मवेदतथीचैव अथर्ववणचक्षमदितेसर्वे सर्वकलसंमिश्रता विमाकर्मतुमागसे देवोकलस
मुपाश्रु: दरसंकृत्वातेनोर्कनेर्मित्रसवेजुमिमंडले व्रह्लाधादेवनासर्वं रिषीसपोधनं गर्गादिय
मलितासर्वे अष्टौनेकलपर्वता माता कहसमुद्दसलोकपालेसमंनिता तीर्थानेचाल्वारिसवे 5

कलशपत्र सर्वमंगलसंयुक्तामेकं च सर्वमङ्गल्यानी तु रत्नादियुक्तं कारकं कलसं हेमं अथवा रूप्यं ताम्रमृन्म
५ यं निरदोषं निरमलं श्वेत वस्त्रवेष्टितं निर्मलजलेन संपूर्णं तस्मिन् सर्वौषधि धान्य पञ्चरत्नं निक्षिप्य समकृतं
सुनेत्रं सजीवं दक्षिणा निधाय पञ्चामृतं सवदेनं चरणं च प्रतिष्ठ्य जलं कलं कपिलाद्यानि
कालिंगवाद्येषु तत्क्षणं ब्राह्मणाजनेन विद्या छत्रीयाः जनेन मध्ये वैश्याः जनेन दानं शूद्रा
निसंमुखं अष्टवार्षिकं जनेन पुत्रं रागान् रागयुक्तं वैश्याः चलनं जनं न मोक्षार्थं जन्तू
गतिः॥ इति श्री कलशविधानं समाप्तं॥ वेदपूज्या नवेति आचार्य ऋग्विति त्रिविधादयः
ज्ञा प्रसन्नाः तिकावितु प्रतिसंवत्सरे नरस्त्रीयोर जपमाणो आसत्रीतिरजा साधनवनासति।
वर अर्हसाध किं साध सति वेदे सीलवंतं स्नानवंतं मध्यावेनं स्वरवेन दक्षिवंतं परदाराव रस्य
नीसायेसाध वेदेवरदसदोषरहितं किं दसदोष कोणपि धोगुल कपिल हस्तअति
दीरघः सुसतिरोगी वधरी कोकुदी जथा अंगोनाया जातिपांतितु एषादसदोषविवरजितं
तंसि कं आप्रदिद्यते वेदव्यासी नवनास्ति अरवेषा इदं वरायतिलकं मित्याहरंतिविष्टि
स्मावाद्यपादार्घा शुद्धिकामारघा आचमनं मावमनं त्रियोन्याचमनं मधुपरकं दघिम
धि घृतयुक्तानि कांस्यं च कांस्यं नानिर आस्त्रीया प्राहुस्त्याद विविष्टरा द्विना विष्टरा विये
विष्टरा त्रयोविष्टरा किंविष्टरा देवादेवानां वेषारियानां देवामनुष्याने शतिशूद्रे नानेप्रति
शूद्रनामी ब्रह्मियमोस मीसमानानं सुदितामि वास्तुरजायं विमातिमधिष्टमी जोमोक आपि
दसमी तेनीमाप्यो पविसनी पादयो अनिविष्टरा समेपादाप्रक्षालिते दक्षिणादक्षिणं ५
डोजितं ब्रह्मणोचरणं दक्षिणं प्रथमे निराज्या दक्षिसीनिराज्योदी समर्ड्याद्यायो अ मे॥

सीनाया देवि हंदया: सर्वप्रासनाशनावासंवयो निनायदीचेन्या प्राणास्तेन्हसनी देवाद्यमनं आ
यो रनासो आलिर चक्षो करण्याश्रात्रं वाद्वेवा अोरवलमस्त सुरवायोजोरस्तु अरिष्टसमा
प्तनी तनसतनामोसदिजानाणं विनेदकाया ससमाद्या गजरगजकामगज मातारूद्राणं
द्विनापसु नागं सुसादितं मधुतमिप्राणया कंचं बुद्वी केतकीजेप्या नागांमनागां वधु रिष्टाम
स्वीशुषिवा यावमनागं दितं वैजनमध नोमधव्यं परमोप्य रुपमनागं तेनादेमधुनोमधव्यं
परमेण रूपेण नादोसेन तो भ्रजाता श्रणेनता नेनेनेश्रीया माद्यसोमसो दधिजगन्या मधिलि
वाद केरसेनश्रीयः संवत्सरे जने मनके त्याने अर्घयावायनजाजयं श्रातिक त्वा अरघा
श्राति संतोरस्यि॥ इति श्री वटुरघ्या संपूर्णं मातः शैलजकनासयत्रिवसुधा श्रृंगारहारावलि स्वर्गारि
दक्षिणे जसंपनि जवंती नागीरथी प्रार्थये यन्नीरवसनस्वदंतु पिवतस्वही विष्णुकीडित: स्वनामसमरतं
स्वकर्षि तदूत: स्या नेत्रभीरमय: १ चेन्नीरतरुकोटरांतरगतो गंगा विहंगोवरं वन्नीरनरकांतका
रणि वरं मत्स्योथवा कच्छप: नेवान्यत्र मदांधसिंधुर घटा संघट्ट घंटारण २ कारत्रस्तसमस्तवैरिवनि
तालब्धस्तुतिर्भूपति: ३ उक्षा पक्षी तुरग उरग: कोपि वा वारणो वा वारिणस्या जन्ममरणे के त्राङ-
त्वासंलिहः नेवमस्य प्रविरलरणत्कंकणक्काणमिश्रे वरिस्त्री निश्चमरपवनं वीजिता चमिपाल ३ यत्र
स्मरविद्धकिन्नरवधूत्तुंगस्तनास्फालितं स्नानाय प्रतिवासरं जवजमगंगा जलं निर्मलं ४ काकैर्नि
मित्तकुक्षि: कवलितगोमायुनिर्लुंठितं श्रोतोभिश्चलितं तटांतनिलितं वीचीभिरांदोलितं दिव्य
स्त्रीकरचारुचामरमरुत्संवीज्यमान: कदा द्रक्ष्ये परमं पवित्रिपयसां भागीरथी स्वं वपु: ५ पापाप 6

विवाहश्रीय

६

फलेश्रीकृष्णमद

रिउरितारितरंगधारि हरशवारि गिरिराजगुहाविदारं झंकारकारि हरिपादरजोपहारि गंगं पुनातु
सततं शुभकारिवारि ६ गंगावारिमनोहारि उल्पकारि शुनाशनः हरेत्समांगसं वारि मुरारिचरण
च्युतं ७ अभिनवबिसवल्ली पादपद्मस्य विष्णोः मदनमथनमौलेर्मालती पुष्पमाला जयति जयपता
का कापि मोक्षलक्ष्मीः क्षपितकलिकलंका जाह्नवी नः पुनातु ८ गंगाष्टकं पठति यः प्रयतः प्र
भाते वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्य प्रक्षाल्य गात्रे कलिकिल्बिषमाशु पंकं स्वर्गं लभेत्
पतति नैव तु गर्भवासे ९ इति गंगाष्टकं स्तोत्रं समाप्तं अथ श्रीवडीनाथजी को मंत्रपाठ लिख्यते ॥ ॐ नमो
भगवते उपशमशीलाय उपरतानात्म्याय नमो किंचनवित्ताय ऋषिऋषभाय नरनारायणाय
परमहंसपरमगुरवे आत्मारामाधिपतये नमो नमः २ अथ चतुर्व्यूहोपासनामंत्र लिख्यते ॐ न
मो भगवते वासुदेवाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय नमः संकर्षणाय च २ ५ चा
वार | अंगाराय द्विर्णा | तिथिवारसमाचरेत् | सप्तदीपसमा | युक्तास्ति नागसउत्पन्ना | मे को लभति पाताले
द्वितीयमूलमंगले | तृतीये स्वर्गं उच्यते | पाताले यथा उत्पात | मूलमंगले श्रीशुभं | स्वर्गलोके ते च मृ
एव अग्निसउत्पत्ते । इति अग्निवास | हीरकंद दिवस भी जोरविपलटाति मासदिशु जोलीये। अथ कवल्लिउ

६